

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



"हित = अठँ "ऐंड्ड = प्राण = प्राण अ एंड्ड ड ऐंड्ड = प्राणो अंगे अंगे गेंड अंगे प्राण ड एंड्ड ऐंड्र = प्राणो ड अंगेंड अंगे ॥१॥ प्राणा ड अंगेंड अंगेंगेंड अंगे प्राण = प्राणो ड अंगेंड अंगे नि अंगेंड अंगे प्राण = प्राणो ड अंगेंड अंगे नि ॥२ ॥ अंगेंड में नि अंगेंड अंगेंगेंड अंगे निदी ह्य सही ह्या अंगेंड अंगेंगेंड अं गेनिदी ह्य त् मंगें अंगुड इत्यंगेंड अंगे॥ ३॥ निदी ह्य ही ह्य - नि नि दी ध्य दें द्र हें द्रो दी ध्य नि नि दी ध्य दें द्र = ॥ ४॥ दी ध्य दें न्द्र डे एे न्द्रो दी ध्य द्रो ध्य दें न्द्र ड डे द्राने हैं डे द्रान ड ऐ न्द्रो दी ध्य द्रो ध्य दें द्र ड डे द्रान : ॥ ५ ॥ ऐ न्द्र ड डे द्रान ड ड टे द्रान ड डे द्रान ड ड डे द्रान ड डे द्

अंगड उदान ड उदानोड अंगे ड अंगे निधीनः ॥ उदान उद्द रौन आनः ॥ ७ ॥ अंगेड अंगे निधीनो निधीनो छे अंगे। अंगे निधीनः ॥ अंगेड अंगड दसंगेड अंगे ॥ निधीन उद्दिति नीधीनः ॥ ८ ॥ देवे त्वस् भत्वस् देवे देव त्वस् प्रिमू पि च्वस् देवे देवे त्वस् भू पि ॥ १ ॥ त्वस् भू पि भू वि त्वस् म्लस् ॥ २ ॥ भू वि ते भू वि त्वस् म्लस् से ते वि स्मामेलेख मां भू वि ते भू वि

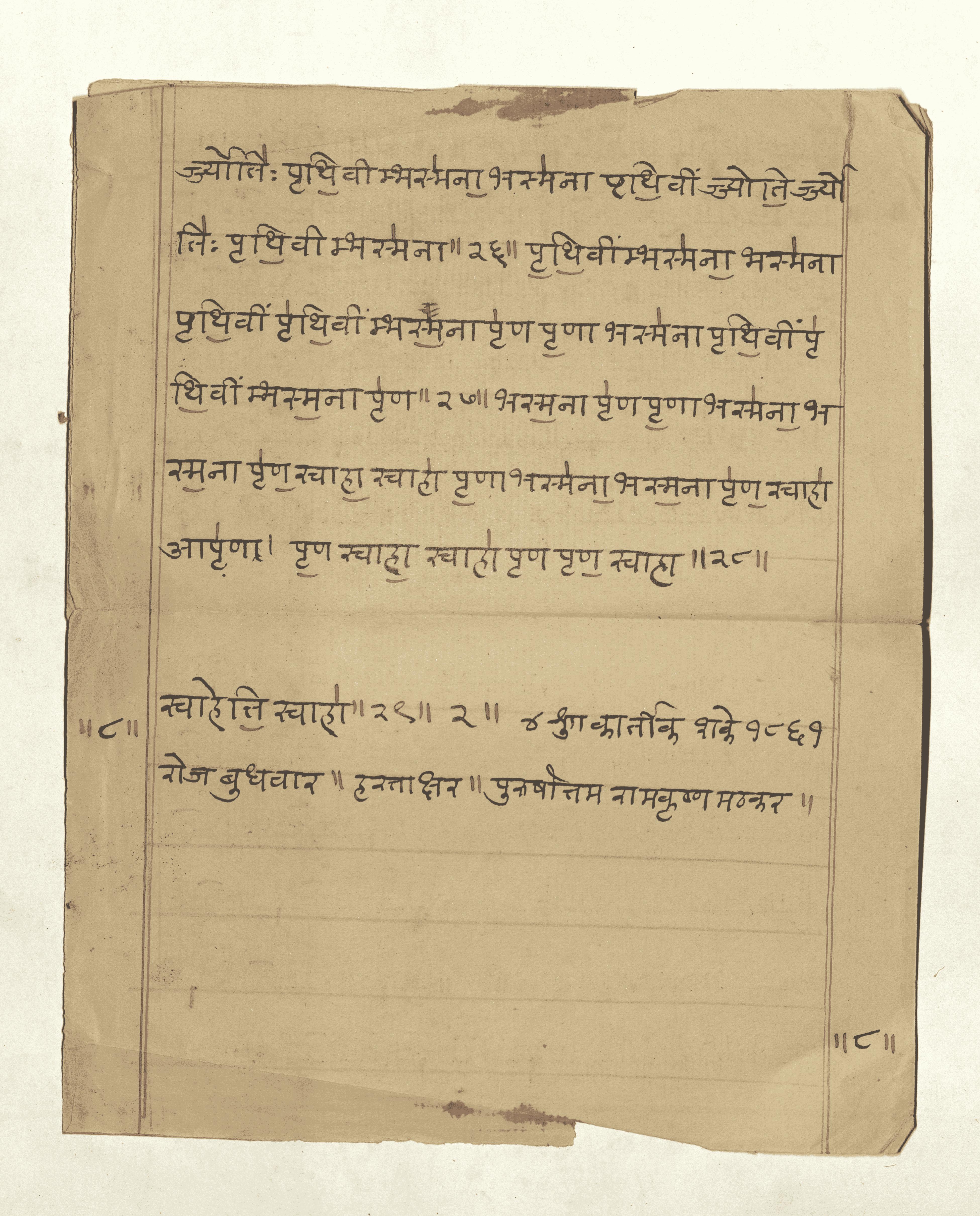
जमणे मुख्येणाह्मेतु च अहाँ स्तान धन्त हों स्तान्। तान्मेद्रस्ता मेद्रस्त स्ता हता नृमेद्रस्तः। मद्रस्तः प्राते प्राति पद्रस्तामेद्रस्तः प्राते ७ प्राति प-यसा पन्ता प्राते प्राति पन्ता । पन्त्रसा श्रेभीषता श्रीवात पन्ता प्रते तार्श्वीषम ७ अश्रीषता नी वृध्यन्ता नी वृध्यन्ता श्रीषता श्रीष्ठीषता नी वृध्यन्त ५

अवीन्धन्त प्राडादीः प्राडादी रवीन्धन्ता वीन्धन्त पुराडाही: ।। पुराडाही रपुरपुः पुना उरिशः पुराडाहीरपुः प उत्पूरिण्युना त्रियुन्त पुरपुरिण्युनी। अरिज्युन्ति . वस्त्र-थत्याञ्चलाञ्चितास्य वस्यती। स्परं स्य तीन्द्रा इन्द्रः सरस्वती सरस्वतीन्द्रः। इन्द्रः सुधार्षा सुनारिष्टुन इन्द्रः सुनामाण सुनामान् सुरा स्वामान् सुनामान् युगामा सुगामा सुरासामानु पु सुगामाने सु। जामाप स्वासनामान्द्रस्या सत्या हः स्वासनामान् स्वामान् स्वामान् स्वामान् सुरासामानितिसुराऽ स्वामानु ५ २५ त्वामधाद्युत्वा (बामध्य प अस्य अप प असे प साम्य प असे पड़ अराम्य जयान्य मुष्ड मुष् अराम्प्य । अराम्प्य इत्त

अस्याणान्त्य मन्त्र पाद्याणान्त्र पात्य न्त्र पाद्य णोताशास्त्रशास्त्रशास्त्रशोता । अरश्णोताथम्य मस्गानासम् ५ अयस्य माना यजमानायः मययजनमानः भ यजमानी बहुभ्या बहुभा यजमानी यजिमानो खहुभ्यः ज खहुभ्यड आसंगितिभ्यः संगितिभ्यड आबहुभी बहुभा संगतिभ्यः । स बहुभा शतिबहु। ध्याः । प अरा स्नांतिभ्यः । संगतिभ्यङ एष इ एष संगतिभ्यः संग्न निध्यडएषः ५ संगतिभ्य शते सम् १ जितथ्यः ॥ एषममु देव प्रबस् ण अस् वास्वारिवारिवस वस्वारिष् 

नामि दामान्यहुः ७ अहु स्तानि सान्यहुरहु समाड असमाड असन्य ॥ असन्य ॥ न्यशास्य शास्य सास्य शास्त्र प्रशास्ता सास्ता शास्त्र शास्ता प्रास्ता प्राप्ता प्रास्ता प्रास प्रास्ता प्रास प्रास्ता प्रास्त प्रास्त प्रास्ता प्रास्ता प्रास्ता प्रास्ता प्रास्ता प्रास्ता प्रास्ता प्रास्त इंषितारित्य युन्येय जितः । इषित श्रेष्य-याष्तडर्रीष तञ्चे ५ - यहातहि तश्य-ग्रहातः ५ हात्रस्यसिन होतेहिनिस्सी ५ आस्निभड़वा-धाय भड़वा-धायास्यासी भित्रवान्याम् प्रभिद्धवान्याय प्राप्ताः प्राप्ता भद्धान न्याय भद्रवान्याय माजनाः । भद्रवान्यायानि भद्रा वान्याय

तडइति अड इषितः । मानुषः स्नुस्वादायं स्नुस्वादायं मानुषानानुषः स्चिथान्य । स्चिशियः स्तिनाश्य स्तिनाश्यस्ति। ध्रुनिनाश्री न्ते ते धूमोर्गाछ्ल्॥ २२॥ धूमोर्गचछ्लु गुछ्लु धूमोधूमो गेच्छत् रचः रचेगच्छत् धुमोधूमोगच्छत् स्वः॥२३॥ गच्छत् स्यः स्वर्गच्छत् गच्छत् स्य ज्योति ज्योतिः -रचर्गच्छत राच्छत रच उत्योतिः। यन् ।। रच उत्योति उत्यो तिः बचः स्व ज्योतिः पृथिवीं पृथिवीं ज्योतिः स्वः स्व ॥७॥ ज्योतिः पृथि। वीं २५॥ ज्योतिः पृथिवीं पृथिवीं ज्योति





```
[OrderDescription]
,CREATED=16.09.19 15:55
TRANSFERRED=2019/09/16 at 15:59:09
,PAGES=10
,TYPE=STD
,NAME=S0001848
Book Name=M-666-VAIDIK VIDHI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=0000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=0000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=0000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=0000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
```